

एक सौ सत्तर तीर्थकर का अर्घ्य

पंच भरत ऐरावत पावन, एक सौ साठ विदेह विशेष।
एक सौ सत्तर कर्म भूमियों, में हो सकते हैं तीर्थेश।
क्षेत्र विदेहों में तीर्थकर, कम से कम रहते हैं बीस।
जिनके चरणों विशद भाव से, झुका रहे हम अपना शीश॥

ॐ ह्रीं ढाई द्वीप प्रतिकाले सप्ततिशत कर्म भूमि स्थित सर्व तीर्थकरेभ्यो अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा।

परम्परागत आचार्यों का सामूहिक अर्घ्य

आदि सागराचार्य गुरु श्री, महावीर कीर्ति जी ऋषिराज।
विमल सिन्धु सन्मति सागर, गुरु भरत सिन्धु पद पूजें आज॥
गणाचार्य श्री विराग सिन्धु के, 'विशद' करें चरणों अर्चन।
पूज्य सर्व आचार्यों के पद, मेरा बारम्बार नमन॥

ॐ हूं गुरु परम्पराचार्य सर्व आचार्य परमेष्ठी चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य श्री विशद सागर जी का अर्घ्य

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर, थाल सजाकर लाये है।
महाव्रतों को धारणकर ले, मन में भाव बनाये हैं॥
विशद सिन्धु के श्री चरणों में, अर्घ्य समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ्य हो प्राप्त हमें, गुरुचरणों में सिर धरते हैं॥

ॐ हूं चौंसठ ऋद्धी विधान के रचयिता प. पू. आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय
अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय महार्घ्य

अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु के चरण नमन।
जैनागम जिन चैत्य जिनालय, जैन धर्म को शत्रु वन्दन॥
सोलह कारण धर्म क्षमादिक, रत्नत्रय चौबिस तीर्थेश।
अतिशय सिद्धक्षेत्र नन्दीश्वर, की अर्चा हम करें विशेष॥
दोहा- अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, 'विशद' भाव के साथ।

चढ़ा रहे त्रययोग से, झुका चरण में माथ॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु, सरस्वती देव्यै,
सोलहकारण भावना, दशलक्षण धर्म, रत्नत्रय धर्म, त्रिलोक स्थित
कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य-चैत्यालय, नन्दीश्वर, पंचमेरु सम्बन्धी चैत्य-चैत्यालय,

कैलाश गिरि, सम्मेद शिखर, गिरनार, चम्पापुर, पावापुर आदि निर्वाण क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र, तीस चौबीसी, तीन कम नौ करोड़ गणधरादि मुनिश्वरेभ्यो समुच्च महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पुष्पक्षेपण करते हुए शांति पाठ बोले)

शांतिपाठ

शांतिनाथ शांति के दाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता।
परम शांत मुद्रा जो धारे, जग जीवों के तारण हारे॥
शरण आपकी जो भी आते, वे अपने सौभाग्य जगाते।
शांतिपाठ पूजा कर गाएँ, पुष्पांजलि कर शांति जगाएँ॥
जिन पद शांती धार कराएँ, जीवन में सुख शांति पाएँ-3।
जीवों को सुख शांति प्रदायी, धर्म सुधामृत के वरदायी॥
शांतिनाथ दुख दारिद्र नाशी, सम्यक्दर्शन ज्ञान प्रकाशी।
राजा प्रजा भक्त नर-नारी, भक्ति करें सब मंगलकारी॥
जैन धर्म जिन आगम ध्यायें, परमेष्ठी पद शीश झुकाएँ।
श्री जिन चैत्य जिनालय भाई, विशद बनें सब शांति प्रदायि॥

ॐ शांति-शांति-शांति (दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

विसर्जन पाठ

भूल हुई हो जो कोई, जान के या अन्जान।
बोधि हीन मैं हूँ विशद, क्षमा करो भगवान॥
ज्ञान ध्यान शुभ आचरण, से भी हूँ मैं हीन।
सर्व दोष का नाश हो, शुभाचरण हो लीन॥
पूजा अर्चा में यहाँ, आए जो भी देव।
करूँ विसर्जन भाव से, क्षमा करो जिन देव॥
॥इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥ (ठोने में पुष्पक्षेपण करें)

आशिका लेने का मंत्र

पूजा कर आराध्य की, धरें आशिका शीश।
'विशद' कामना पूर्ण हो, पाएँ जिन आशीष॥

पाद प्रच्छालन

बड़े पुण्य से अवसर आया है, गुरुवर का जो दर्शन पाया है।
पाद प्रच्छालन अब कर्मों का गालन, अब करना है गुरु के चरण॥
क्योंकि बड़े पुण्य से

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्ज:-माई री माई मुंडरे पर तेरे बोल रहा कागा...)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारें, आरति मंगल गावें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥

गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के....
ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता॥
सत्य अहिंसा महाव्रती की...2, महिमा कही न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥

गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के....
सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया॥
जग की माया को लखकर के....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥

गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के....
जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धार।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा॥
गुरु की भक्ति करने वाला...2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥

गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के....
धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे॥
आशीर्वाद हमें दो स्वामी....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥

गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के...जय...जय॥

रचयिता : श्रीमती इन्दुमती गुप्ता, श्योपुर